पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 01.11.2016 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के
58वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में
भव्य संगीत संध्या
''एक शाम शहीदों के नाम''
सोमवार, 14 नवम्बर 2016
सायं 5 से 7.30 बजे तक
दिल्ली हाट, आई.एन.ए., नई दिल्ली
आप सादर आमन्त्रित हैं

वर्ष-33 अंक-11 कार्तिक-2073 दयानन्दाब्द 192 01 नवम्बर से 15 नवम्बर 2016 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.11.2016, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

133 वें महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस पर भव्य संगीत संध्या सोल्लास सम्पन्न

महर्षि का बलिदान सदियों तक समाज का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा —डा.अनिल आर्य

समारोह अध्यक्ष श्री प्रदीप तायल को स्मृति चिन्ह भेंट करते राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य व पूर्व महापौर डा.महेश शर्मा। द्वितीय चित्र—सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी को सम्मानित करते आचार्य अखिलेश्वर जी,डा.अनिल आर्य,स्वामी विश्वानन्द जी व आचार्य गवेन्द्र शास्त्री।

सोमवार, 31 अक्तुबर 2016, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में दिल्ली हाट, पीतम पुरा, दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 133वें बलिदान दिवस पर ''एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम'' भव्य संगीत संध्या का आयोजन किया गया । गायक कलाकार डा.सुकृति व अविरल माथुर एवं अंकित उपाध्याय ने समां बांध दिया जो एक यादगार शाम बन गयी। 1000 से अधिक आर्य जन तालियां बजा बजा कर झूम उठे आर्य समाज में प्रायः ऐसा द्रश्य देखने को नहीं मिलता है । भारत विकास परिषद् पीतमपुरा के भी सभी साथी उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। आचार्य अखिलेश्वर जी ने 11 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न करवाया। स्वामी विश्वानन्द जी,आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री,डा.वीरपाल विद्यालंकार,राजकुमार जैन,डा. अमित नागपाल, प्रदेश भाजपा महामन्त्री रेखा गुप्ता, पार्षद ममता नागपाल, भूपेन्द्रमोहन भण्डारी, पूर्व महापौर महेश शर्मा, संजीव मिगलानी, दीपक सेठिया, सुरेन्द्र कोहली, यशोवीर आर्य, सुरेश आर्य, रणसिंह राणा, राजीव आर्य, रवि चड़डा, नरेन्द्र आर्य सुमन, अमीरचन्द रखेजा, उर्मिला आर्या रचना आहुजा, सोनल सहगल, ओमप्रकाश मनचन्दा, व्रतपाल भगत, दुर्गेश आर्य, रामकुमार सिंह, वेदप्रकाश आर्य, प्रि.रमेश कुमारी भारद्वाज, ओमप्रकाश जैन, डा.सुषमा अरोड़ा, राजीव मुखी, राजकुमार आहुजा, धर्मवीर आर्य, कृष्णचन्द पाहुजा, सुदेश डोगरा, राकेश भटनागर, प्रकाश आर्य, अशोक आर्य, अनिता कुमार, प्रवीन आर्य, रेखा शर्मा, विनोद कालरा, सुभाष खुराना, नरेन्द्र अरोड़ा, ओमप्रकाश नागिया, सुरेन्द्र चौधरी, महावीर सिंह आर्य, ओमवीरसिंह, धर्मदेव खुराना, राजेश जुनेजा, रंजना चितकारा, ओम सपरा, विजय कपूर, पी.के. सचदेवा, आशा भटनागर आदि सैंकड़ो आर्य जन उपस्थित थे। महामन्त्री महेन्द्र भाई, देवेन्द्र भगत, प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता, प्रदेश महामंत्री अरूण आर्य, शिवम मिश्रा, रोहित आर्य, माधवसिंह, राकेश आर्य, प्रदीप आर्य ने कुशलतापूर्वक अपनी टीम के साथ व्यवस्था सम्भाली। सभी आर्य जनों के लिये भरपूर ऋषि लंगर का प्रबन्ध किया गया था। अत्यन्त उत्साह के साथ आर्य जन घरों को लौटे क्योंकि आर्य समाज की लीक से हट कर कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

शिक्षाविद् प्रि.रमेश कुमारी भारद्वाज का अभिनन्दन करते पार्षद रेखा गुप्ता,डा.अनिल आर्य,रामकुमार सिंह। द्वितीय चित्र—समाजसेवी श्री सुरेन्द्र कोहली का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,प्रदीप तायल।

दिल्ली हाट पीतम पुरा के खुला स्टेडियम आर्य जनों से खचाखच भरा हुआ था जो यह सिद्वकर रहा था कि दयानन्द के दीवानों की आज भी कोई कमी नहीं है

ऋषि दयानन्द का बलिदान सत्य की विजय व असत्य की पराजय

— मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ऋषि दयानन्द ने दीपावली के दिन लगभग सायं 6.00 बजे अपनी नश्वर देह का अजमेर की भिनाय की कोठी में त्याग किया था। देहत्याग का मुख्य कारण उन्हें जोधपुर में रात्रि को दुग्ध में विष दिया जाना और उसके बाद उनके उपचार में असावधानी तथा चिकित्सक द्वारा जानबूझकर की गई साजिश प्रतीत होती है। यदि उनकी चिकित्सा डा. अलीमर्दान के इतर किसी अन्य निष्पक्ष चिकित्सक से कराई जाती तो पूरी सम्भावना थी कि वह विष के प्रभाव से बच जाते और स्वस्थ हो जाते। चिकित्सा के नाम पर उन्हें हानिकारक ओषधियों की अधिकाधिक मात्रा दी गई जिससे लाभ के स्थान पर हानि होने से उनका पूरा शरीर विष व ओषधी के नाम पर की गई छलयुक्त चिकित्सा से मृत्यु के निकट पहुंच गया। ऐसी स्थिति में ऋषि दयानन्द ने अपने अनुयायियों से दिन, वार व तिथि पूछ कर कार्तिक अमावस्या दीपावली को अपनी जीवन लीला समाप्त करने का निश्चय किया। यह निश्चय उन्होंने किसी को बताया नहीं परन्तु मृत्यु से पूर्व जो घटनायें घटी, उससे यह अनुमान होता है कि उन्होंने दीपावली के दिन ही अपने शरीर त्याग का निश्चय किया था। अपने लोगों के विशेष भोजन बनवाना और उनके लिए लायी गयी भोजन की थाली को प्रेमपूर्वक देख कर भोजन को लौटा देना, नाई को बुलाकर क्षौरकर्म कराना, शुद्ध वस्त्र धारण करना, अपने भक्तों व अनुयायियों से बातें करना और उन्हें पुरस्कृत करने के साथ सान्त्वना देना और फिर सबको अपने पीछे आने का निर्देश कर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना कर अन्तिम आदर्श वाक्य 'ईश्वर तैने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो, पूर्ण हो, अहा, तैने अच्छी लीला की।' कहकर नश्वर देह का त्याग करना उनकी मृत्यु को आक्समिक व स्वतः होना सिद्ध नही करते अपितु यह बातें शरीर त्याग को विवेक पूर्वक निर्णय कर छोड़ने की बात को सिद्ध करते हैं।

ऋषि दयानन्द ने अपने गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से शिक्षा प्राप्त की थी और गुरु के निवेदन व आदेश के अनुसार सत्य सनातन यथार्थ शुद्ध व पवित्र वैदिक धर्म के प्रचार और मत–मतान्तरों की मिथ्या व असत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों का खण्डन करने सहित समाज सुधार का कार्य किया था। वह जानते व मानते थे कि असत्य के खण्डन व सत्य के मण्डन के बिना असत्य और अविद्या का नाश और सत्य और विद्या की वृद्धि नहीं हो सकती और समाज से बुराईयां दूर नहीं की जा सकती थी। असत्य का खण्डन करने का निर्णय करते समय उन्हें इस बात का अवश्य ज्ञान था कि इसका परिणाम उनके जीवन के लिए अनिष्ट हो सकता है। वह योगी थे और उन्हें यह तथ्य भी भलीभांति विदित था कि परोपकार के लिए जीवन का त्याग करना विवेकशील मनुष्य के लिए आवश्यक होता है। उन्हें रामायण और महाभारत सहित इतर इतिहास का ज्ञान भी था जहां कर्तव्य व देश की रक्षा के लिए हमारे महापुरुष और असंख्य वीर सैनिक अपने जीवनों का बलिदान करते आये थे। अतः उन्होंने दीर्घ जीवन और कर्तव्य में से कर्तव्य का चुनाव पहले से ही कर रखा था। एक महात्मा व ऋषि होने के कारण उन्होंने अपने यौगिक बल से उनके जीवन का घात करने के जो प्रयास किये गये थे, उन्हें भी अवश्य जाना होगा परन्तु मर्यादा में रहकर उन्होंने चुप रहना ही उचित समझा, ऐसा ज्ञात होता है। अतः ऋषि दयानन्द जी का अपने कर्तव्य की वेदी पर बलिदान हुआ, यही समझ में होता है। ऋषि दयानन्द ने जब जोधपुर यात्रा की योजना स्वीकार की थी तभी उनके शुभचिन्तक अनुयायियायें ने उन्हें भावी खतरे से आगाह कर दिया था परन्तु ईश्वर व सत्य के प्रचार में पूर्ण विश्वासी दयानन्द ने उन सुझावों की उपेक्षा कर दी थी। यदि किसी कारण उनका जोधपुर जाना टल जाता तो आर्यसमाज की जो हानि उनके 58–59 वर्ष की आयु के बीच जाने से हुई, वह न होती। सत्य, देश व समाज के उपकार के लिए उन्हें जो कष्ट सहन करने पड़े, उन्हें सोचने व विचार करने पर दुःख व पीड़ा होती है।

महाभारत काल के बाद ऋषि दयानन्द जी ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपने अपूर्व पुरुषार्थ और त्याग के कार्यो से देश की बिगड़ी दशा का सुधार करने के लिए न केवल योग में उच्चतम स्थिति समाधि व ईश्वर साक्षात्कार को प्राप्त किया था अपितु ईश्वरीय ज्ञान चार वेदों का यथार्थ ज्ञान भी प्राप्त किया था जो महाभारत काल के बाद किसी योगी, महात्मा व महापुरुष में देखा नहीं गया। यही कारण था कि उन्होंने देश, काल व परिस्थितियों का मूल्याकंन कर और गुरु की प्रेरणा होने पर अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास, मिथ्या पूजा व सामाजिक मिथ्या मान्यताओं के सुधार करने का अपूर्व कार्य किया। मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, सामाजिक भेदभाव और हानिकारक सामाजिक प्रथाओं आदि का न तो वेदों में कहीं विधान है और न ही यह तर्क व युक्ति के आधार पर उचित सिद्ध होती हैं। इन सभी मान्यताओं व परम्पराओं सहित अनेक अन्य कारणों से समाज दुःखों से पीड़ित व विदेशी दासता में जकड़ा हुआ था। भारत के आर्यों व हिन्दुओं को कैंसर के समान यह त्रिदोष, ताप व रोग लगे हुए थे परन्तु हिन्दू जाति के तत्कालीन धार्मिक नेता और उनके अनुयायी इन भयंकर रोगों से अनभिज्ञ थे। अतः किसी योग्यतम धार्मिक चिकित्सक द्वारा इन रोगों का उपचार आवश्यक था। ऋषि दयानन्द ने न केवल हिन्दू जाति के समस्त रोगों को जाना व समझा अपितु उनका उचित उपचार भी किया। उनके इन कार्यों से स्वार्थी मतवादी लोग उनपर कुपित हुए और उनका अनिष्ट वा जीवन समाप्त करने के नाना प्रकार से षडयन्त्र करने लगे। अंग्रेज अधिकारी भी स्वामी दयानन्द की देश की आर्य वा वैदिक धर्म व संस्कृति सहित स्वतन्त्रता की रक्षा के विचारों से परिचित होने के कारण अन्दर ही अन्दर उन्हें अपना शत्रु मानते थे। अतः ऐसे वातावरण में वह और अधिक जीवित शायद् नहीं रह सकते थे। देर–सबेर विरोधियों के द्वारा उनके जीवन का अन्त होना सम्भावित ही था। अतः जोधपुर में उनके विरोधियों का षडयन्त्र सफल हुआ जिसका परिणाम सन् 1883 की दीपावली के दिन 30 अक्तूबर के दिन उनके नश्वर देह का त्याग होना रहा।

30 अक्तूबर, 1883 दीपावली के दिन ऋषि दयानन्द ने अपने देह का भले ही त्याग कर दिया परन्तु उनकी आत्मा आज भी ईश्वर के सान्निध्य में रहकर ईश्वरीय आनन्द वा मोक्ष का अनुभव कर रही है। सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेदभाष्य, यजुर्वेदभाष्य,, संस्कारविधि, आर्याभिविनय और अपने अन्य ग्रन्थों के कारण आज भी वह अपने अनुयायियों के मध्य विद्यमान हैं और अपने ग्रन्थों व जीवन चरित तथा पत्रव्यवहार आदि के द्वारा उनका मार्गदर्शन करते हैं। उनके मानव सर्वहितकारी कार्यों से सारा संसार लाभान्वित हुआ है। यद्यपि मिथ्या उपासना व पूजा संसार से समाप्त तो नहीं हुई परन्तु संसार में सहस्रों, लाखों व करोड़ो लोग आज ईश्वर, जीव और प्रकृति के सत्य स्वरूप को जानकर उनके व आर्यसमाज के अनुयायी बनकर ईश्वरोपासना, यज्ञ व इतर वैदिक कर्मकाण्डों को करते हैं जो इस जीवन में सुखदायक होने के साथ उन्हें मृत्यु के बाद उन्नति व मोक्ष मार्ग का अधिकारी भी बनाते हैं। वर्तमान काल में ज्ञान विज्ञान तीव्र गति से बढ़ रहा है। इस स्थिति के प्रभाव से बहुत से मतों के लोगों ने अपने अपने जन्मना मतों के अनुसार आचरण करना भी छोड़ दिया है। अनेक मतों में अपनी कुछ व अनेक मान्यताओं को लेकर अन्तर्कलह भी देखने को मिल रही है। उनमें शंका करने और उसका समाधान प्राप्त करने की स्वतन्त्रता नहीं है। दूसरी ओर वैदिक धर्म में सबकों शंका करने व उसका समाधान प्राप्त करने की पूरी स्वतन्त्रता है। अतः वैदिक धर्म ही आज का सबसे अधिक तर्क व युक्तियों से पूर्ण एक वैज्ञानिक धर्म है। संसार में जितना ज्ञान और विज्ञान बढ़ेगा उतना ही वैदिक धर्म सुदृण और इतर मत जीर्णता को प्राप्त होंगे। वैदिक धर्म के पूर्ण सत्य पर आधारित होने के कारण हम आशा कर सकते हैं कि वैदिक धर्म ही संसार के सभी लोगों का भावी धर्म होगा। कहावत है कि इतिहास अपने आप को दोहराता है। इसका अर्थ यह भी ले सकते हैं कि महाभारत काल से पूर्व वैदिक काल में जो होता रहा है, भविष्य में उसकी पुनरावृत्ति हो सकती है वा होगी। ऋषि दयानन्द का संसार से अविद्या को दूर कर ईश्वर, जीव व प्रकृति के सच्चे स्वरुप व सत्य परम्पराओं को स्थापित करने सहित अन्धविश्वास, अज्ञान, कुरीतियां, मिथ्या परम्पराओं के सुधार व उनके संशोधन में सर्वाधिक योगदान है। ऋषि दयानन्द का दीपावली के दिन अजमेर में बलिदान मिथ्या मतों की पराजय और सत्य वैदिक धर्म की विजय है। उनके विरोधी उनकी सत्य मान्यताओं का खण्डन नहीं कर सकने से पराजित हुए हैं तथा वह धर्म की वेदी पर विजेता सिद्ध होते हैं। वह जीवन में कभी किसी मत–मतान्तर व उसके अनुयायी से पराजित नहीं हुए। आज उनके बलिदान दिवस पर हम उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह ऋषि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने में सभी मनुष्यों के हुदयों में सत्प्रेरणा करें।

196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

रविवार, 13 नवम्बर को यमुना नगर चलो

आर्य संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी का 75 वां जन्मोत्सव डा. अनिल आर्य की अध्यक्षता में रविवार, 13 नवम्बर 2016 को प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक वैदिक ज्ञान आश्रम,वर्कशाप रोड़,यमुना नगर,हरियाणा में मनाया जायेगा । स्वामी आर्यवेश जी,चौ.लाजपतराय आर्य अपना मार्गदर्शन पद्रान करेंगे व बहिन स्वर्ण आर्या(दिल्ली) की भजन मण्डली के मधुर भजन होंगे

–राकेश ग्रोवर,संयोजक,9416038878.

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 38 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी व स्वामी धर्ममुनि जी के सान्निध्य में
आर्य नेता, शिक्षाविद् डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता में
वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज के ब्रह्मत्त्व में
वायु प्रदूषण व पर्यावरण की शुद्धि के लिए

251 कुण्डीय विराट् विश्व शांति यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 27, 28, 29 जनवरी 2017 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान : उत्सव ग्राउण्ड, कड़कड़डूमा, पूर्वी दिल्ली- 110092

मुख्य यज्ञमान : सर्व श्री दर्शन अग्निहोत्री, सुरेन्द्र गम्भीर, रामलुभाया महाजन, चौ. लाजपतराय आर्य

राष्ट्रीय एकता तिरंगा यात्रा : शुक्रवार 27 जनवरी 2017, प्रातः 10:30 बजे
उत्सव ग्राउण्ड से प्रारम्भ होकर इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन आदि विभिन्न कॉलोनियों में
होते हुए वापिस दोपहर 1 बजे उत्सव ग्राउण्ड में समाप्त होगी

मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन
- वेद सम्मेलन
- शिक्षा-संस्कृति सुधार सम्मेलन
- भव्य संगीत संध्या
- आर्य महिला सम्मेलन
- राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था रहेगी

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 8 जनवरी 2017 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्क: श्री वेदप्रकाश आर्य - 9810487559, संजय आर्य - 9311840110
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 8 जनवरी 2017 तक यज्ञवीर चौहान - 9810493055, राजीव कोहली- 9968266014, विकास शास्त्री - 8010204256, अरूण आर्य- 9818530543, विकास शर्मा - 9818161291 पर आरक्षित करवा लें।

हजारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बने

निवेदक

आनन्द चौहान
डॉ. रिखबचन्द जैन
मायाप्रकाश त्यागी
विजयारानी शर्मा
सुरेन्द्र कोहली

डॉ. अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	यशोवीर आर्य	रामकुमारसिंह आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक समारोह	प्रबंधक समारोह
9810117464	9013137070	9871581398	9312223472	9868064422
9868002130	011-22328595			

विश्वनाथ आर्य, कृष्णचन्द पाहुजा, सुभाष बब्बर, रामकृष्ण शास्त्री
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

दुर्गेश आर्य, देवेन्द्र भगत, राकेश भटनागर, ओम सपरा
राष्ट्रीय मंत्री

आनन्दप्रकाश आर्य, सत्यभूषण आर्य, स्वतंत्र कुकरेजा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

प्रवीन आर्य, सुरेश आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, सुशील आर्य
राष्ट्रीय मंत्री

विकास गोगिया, सौरभ गुप्ता
9999119790, 9971467978
संयोजक- जन सम्पर्क

स्वागत समिति : चन्द्रप्रभा अरोड़ा, जवाहर भाटिया, गायत्री मीना, कै. अशोक गुलाटी, अमीर चन्द रखेजा, विनोद खुल्लर, राजकुमारी शर्मा, महेश भार्गव, वीरेन्द्र जरयाल, जगदीश पाहुजा, राजेन्द्र खारी, संतोष शास्त्री, ओमप्रकाश पाण्डे, विजय आर्य, सुभाष ढींगरा, पियुष शर्मा, अमरनाथ गोगिया, लक्ष्मी सिन्हा, उर्मिला आर्य, ओमवीर सिंह

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9868661680, 9312406810

E-mail : aryayouthn@gmail.com Website : www.aryayuvakparishad.com

Group : aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http://www.facebook.com/group/aryayouth

आर्य जनों की तालियों से दिल्ली हाट पीतमपुरा दयानन्द मय हो गया

समाजसेवी डा. सुषमा अरोड़ा,राजीव मुखी,राजकुमार आहुजा आदि कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए व द्वितीय चित्र में मोमबतियां जलाते हुए आर्य जन।

रवि चड्डा ''लाईफ टाईम एचिवमेन्ट अवार्ड'' से सम्मानित व राजकुमार जैन का स्वागत

पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री रवि चड्ड़ा को ''लाईफ टाईम एचिवमेन्ट अवार्ड'' से सम्मानित करते डा.अनिल आर्य,प्रदीप तायल व द्वितीय चित्र–श्री राजकुमार जैन को सम्मानित करते हुए प्रदीप तायल,सुरेश अग्रवाल,पार्षद भूपेन्द्रमोहन भण्डारी व डा.अनिल आर्य।

आर्य समाज विशाखा एनक्लेव व यमुना विहार का उत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 23 अक्तुबर 2016, आर्य समाज,विशाखा एनक्लेव, पीतमपुरा,दिल्ली के उत्सव पर डा.अनिल आर्य को सम्मानित करते मन्त्री ओमप्रकाश गुप्ता, डा.डी.पी.एस.वर्मा, प्रधान डा. धर्मवीर आर्य व रणसिंह राणा। द्वितीय चित्र–आर्य समाज, यमुना विहार, दिल्ली के उत्सव पर डा. अनिल आर्य के साथ मन्त्री योगेश आर्य, वीरबहादुर ढींगरा, मुकेश पवार आदि।

समाजसेवी आर.के.चिलाना व रोजी पण्डित–स्व.सुनील पण्डित का अभिनन्दन

रविवार, 16 अक्तुबर 2016, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् फरीदाबाद के तत्वावधान में वीर पर्व का आयोजन आर्य समाज,सैक्टर–15, फरीदाबाद के सभागार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान श्री सत्यप्रकाश अरोड़ा ने की। आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री का उद्बोधन हुआ। चित्र में–ऐस्कॉर्टस लि. के पूर्व उपप्रधान श्री आर.के.चिलाना को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, डा. गजराजसिंह आर्य, जिला अध्यक्ष जितेन्द्र सिंह आर्य व नन्दलाल कालरा। द्वितीय चित्र–समाजसेवी श्रीमती रोजी पण्डित व श्री सुनील पण्डित (अब स्वर्गीय निधन 30.10.2016) का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, जितेन्द्रसिंह आर्य,सी.के.पवार। समारोह का कुशल संचालन महामन्त्री वीरेन्द्र योगाचार्य ने किया।

251 कुण्डीय यज्ञ की तैयारी बैठक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की आर्य महासम्मेलन व 251 कुण्डीय यज्ञ की तैयारी हेतु ''विशाल कार्यकर्ता बैठक'' रविवार, 6 नवम्बर 2016 को सायं 3.00 बजे आर्य समाज,सूर्य निकेतन,विकास मार्ग,पूर्वी दिल्ली में होगी।

कृपया सभी आर्य युवक,आर्य जन समय पर पंहुचें

–यशोवीर आर्य,संयोजक,09312223472

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री आर.सी.मुन्जाल (आर्य समाज, पश्चिम विहार) का निधन।
2. वैदिक विद्वान आचार्य अर्जुनदेव वर्णी (गुरूग्राम) का निधन।
3. श्री सुनील पण्डित (फरीदाबाद) का निधन।
4. श्रीमती देविका शर्मा (बहु माता नारायणी देवी, मायापुरी) का निधन।
5. आर्य नेता श्री जयनारायण अरूण (बिजनौर) की ''धर्मपत्नि'' का निधन।
6. श्रीमती गीता आर्या (आर्य समाज, हापुड़) का निधन।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970